अभिनव कदम

१०

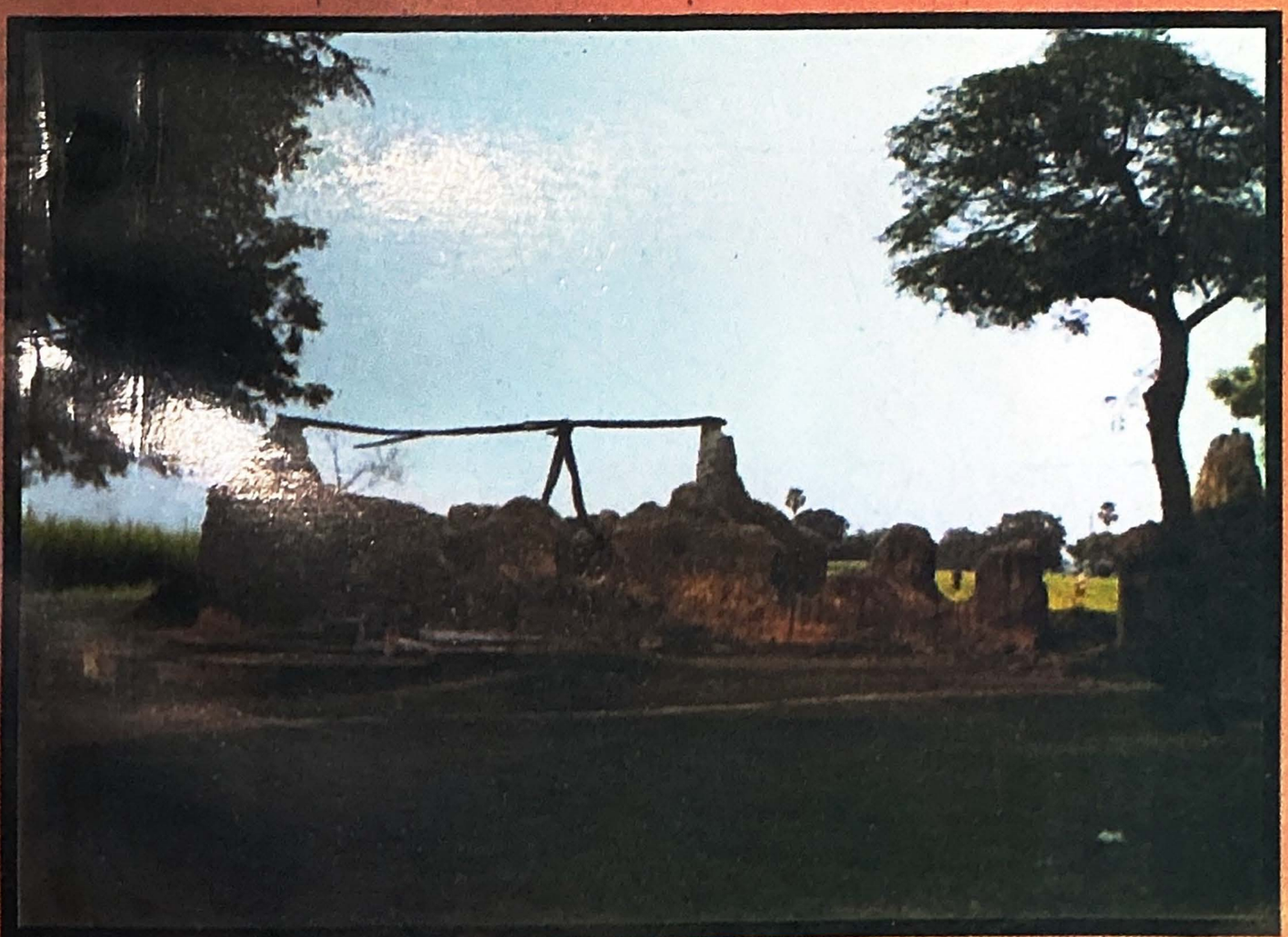

वर्ष - ७ अंक १० नवम्बर २००३-मई २००४

अभिनव कदम

यह अंक

बदरी विशाल पित्ती

को

सादर समर्पित

संस्थापक-संरक्षक : अब्दुल बिस्मिल्लाह, उत्तम चन्द | जनसंस्कृति के पक्ष में आयोजन

वर्ष : ७ | अंक : १० | नवम्बर २००३ - मई २००४

अभिनव कदम

: प्रधान संपादक :
चन्द्रदेव राय

: संपादक :
जयप्रकाश धूमकेतु

: संपादन सहयोग :
शिवकुमार पराग, राघवेन्द्र प्रताप सिंह

: प्रसार व्यवस्था :
श्रीमती राजेश्वरी, जितेन्द्र मिश्र

: संपर्क :
२२३, प्रकाश निकुंज, पावर हाउस रोड, निजामुद्दीनपुरा
मऊनाथ भंजन, मऊ (उ.प्र.) २५७१०१
फोन (०५४७) २२३११३, मो. ९४१५२४६७५५

आवरण : **असगर वजाहत**

: सहयोग राशि :

यह अंक	:	५०/-
वार्षिक	:	१००/-
आजीवन सदस्यता	:	१०००/-

प्रकाशक : साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्था 'मंथन' मऊनाथ भंजन (मऊ)
कम्पोजिंग : ऋतिक कम्प्यूटर प्रिन्टर्स, मऊ दूरभाष : २२२२४८८
प्रिंन्टिग : सर्वेश प्रकाशन, १ बाई का बाग, इलाहाबाद-३ : फोन- २६०५६७२

संपादन/संचालन/अवैतनिक, अव्यवसायिक। अभिनव कदम से सम्बन्धित सभी विवाद मऊ न्यायालय के अधीन होंगे। अभिनव कदम में प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है।

रचना क्रम

क्र.सं.	पाठ का नाम	लेखक	पृष्ठ
१.	संपादकीय		५
	स्मरण		
२.	ज्ञान की राजनीति	एडवर्ड सईद अनु. रामकीर्ति शुक्ल	६
३.	हावर्ड फास्ट : मुक्ति और समानता की संघर्ष गाथाएं	रघुवंशमणि	२२
४.	रसूल हमज़ातोव की तीन कविताएं	अनु. अनिल जनविजय	२८
	लेख		
५.	सात परदे के भीतर	अरूंधति राय	३२
६.	प्रतिरोध और चेतना के कवि पाश	शकील सिद्दीकी	४२
७.	रामविलास शर्मा और महाभारत	वीरेन्द्र सिंह	५२
	लघु उपन्यास		
८.	महामारी	शमोएल अहमद	६१
	कविताएँ		
९.	नरेन्द्र पुण्डरीक की दो कविताएँ		१५३
१०.	सुधांशु कुमार मालवीय की दो कविताएँ		१५६
११.	तेजराम शर्मा की दो कविताएँ		१६०
१२.	राजकुमार कुम्भज की पांच कविताएँ		१६४
१३.	वन्दन मिश्रा की पाँच कविताएँ		१६६
१४.	अर्चना श्रीवास्तव की तीन कविताएँ		१७२
१५.	निर्मल मिलिंद की तीन कविताएँ		१७६
१६.	दामोदर पाण्डेय की चार कविताएँ		१७९
१७.	मोतीलाल की चार कविताएँ		१८१
१८.	नचिकेता के पाँच गीत		१८७
१९.	बृजनाथ के चार गीत		१९२
	कहानियाँ		
२०.	नेपथ्य में युद्ध	राजेन्द्र लहरिया	१९६
२१.	दो पीढ़ियों का अन्तराल	एन. आर. श्याम	२३१
	मराठी कहानी		
२२.	शापित सुख	उत्तम कांबले अनु. गिरीश काशिद	२३४
	समीक्षा		
२३.	'जमीन' के स्वत्व संघर्ष से जुड़ा एक जीवंत आख्यान	शिवकुमार मिश्र	२४१
२४.	जनार्दन प्रसाद झा 'द्विज' स्मृति तर्पण से गुजरते हुए	रामनिहाल गुंजन	२४५
२५.	जहाँ लड़कियाँ कविता बनना नहीं चाहती	राजीव रंजन गिरि	२४९
	रपट		
२६.	'यशपाल के उपन्यास' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी		२५३
२७.	मूठ रहित दोधारी तलवार है व्यंग्य		२५७
२८.	आज साधारण व्यक्ति कविता के केन्द्र में है		२५९

संपादकीय

साहित्यिक एवं वैचारिक दुनिया में लम्बे समय तक अपनी लेखनी के माध्यम से शीर्ष स्थान बना चुके एडवर्ड सईद, हावर्ड फास्ट, रसूल हमज़ातोव का निधन हम सबके लिये दुःखद समाचार है। तीनों ही की मृत्यु थोड़े–थोड़े अन्तराल पर बीते वर्ष हुई। तीनों लेखकों का लेखन अलग–अलग दृष्टियों से भिन्न–भिन्न विधाओं के माध्यम से पाठकों के सामने उपस्थित हुआ। तीनों ही लेखकों का मूल स्वर दुनिया के शोषित, पीड़ित, निर्वासित लोगों के पक्ष में पूरी साफगोई के साथ आज धरोहर के रूप में मौजूद है, साथ ही आगे आने वाले समय में दुनिया के उत्पीड़ित जनों के लिये उनकी कृतियां संघर्षशील चेतना के लिये सतत ऊर्जा प्रदान करती रहेंगी।

एडवर्ड सईद का सम्पूर्ण लेखन साम्राज्यवाद एवं उपनिवेषवाद तथा निर्वासन के विरूद्ध पूरी दुनिया की मानवीय चिन्ताओं के साथ–साथ सृजित हुआ है। ओरिएण्टलिज्म, कल्चर एण्ड इम्पीरियलिज्म, क्वेशन आफ पैलेस्टाइन, द पालिटिक्स आफ डिसपजेसन, दि रिप्रजेण्टेशन ऑफ इन्टेलेक्चुअल जैसी एडवर्ड सईद की महत्वपूर्ण कृतियों से दुनिया का हर जागरूक पाठक, विचारक, बुद्धिजीवी भलि भांति परिचित है।

हावर्ड फास्ट ने अपनी अस्सी पुस्तकों की रचना अमेरिकी भूमि पर रहते हुये किया। इतिहास के पन्नों से जिन संघर्ष गाथाओं को गायब किया जा चुका था उन्हें हावर्ड फास्ट ने अपने उपन्यासों के माध्यम से अमर बना दिया। स्पार्टकस (आदि विद्रोही), मुक्ति मार्ग, समरगाथा, अमेरिकन, सिटिजन टाम पेन, फ्रीडम रोड जैसी हावर्ड फास्ट की कुछ ऐसी महत्वपूर्ण कृतियां हैं जिनका दुनिया की तमाम भाषाओं में अनुवाद ही नहीं हुआ बल्कि लोगों ने ढूढ़–ढूंढ़ कर इन किताबों को पढ़ा भी। जहां 'आदि विद्रोही' में रोमन साम्राज्य की गुलामी प्रथा के विरूद्ध गुलामों की संघर्षगाथा है, वहीं 'मुक्ति मार्ग' में अमेरिकी आजादी के संघर्ष को रेखांकित किया गया है। 'समरगाथा' इज़राइल में यहूदियों के

संघर्ष की पृष्ठभूमि पर लिखा गया उपन्यास है।

रसूल हमज़ातोव को अपने कवि पिता हमज़ात से साहित्य का संस्कार मिला था। दागिस्तान की सोलह भाषाओं में अवार भाषा बोलने वाले लगभग एक लाख साठ हजार लोग रहते हैं। उसी अवार भाषा में रसूल हमज़ातोव एवं उनके पिता प्रतिष्ठित कवि के रूप में जाने गये। रसूल हमज़ातोव मूलतः लोककवि के रूप में ख्याति प्राप्त कर चुके थे। उनकी कविताओं के अनेक संग्रह प्रकाशित हुए। उनका अन्तिम कविता संग्रह 'प्रेम गीत गाता हूं मैं' उनकी मृत्यु के कुछ ही दिन पूर्व प्रकाशित हुआ। दुनिया के पैमाने पर रसूल हमज़ातोव को उनकी कृति 'मेरा दागिस्तान' ने प्रतिष्ठित किया, जिसका अनुवाद दुनिया की विभिन्न भाषाओं में हुआ। दूसरों की बात तो मैं नहीं जानता लेकिन मेरी जिन्दगी में आने वाली पहली किताब 'मेरा दागिस्तान' ने मुझे किताबों की दुनिया का हमसफर बना दिया। मुझे यह किताब उन दिनों मऊ में सेवारत मेरे कवि मित्र स्वप्निल श्रीवास्तव के माध्यम से प्राप्त हुई थी। एडवर्ड सईद, हावर्ड फास्ट, रसूल हमज़ातोव जैसे साहित्य के तीन वैश्विक स्तम्भों का आज न होना किसे नहीं खलेगा। परन्तु उनकी कृतियां हमेशा समाज के लिये बतौर धरोहर काम आती रहेंगी। इन तीनों लेखकों पर बतौर स्मरण कुछ सामग्री पाठकों तक पहुंचाने की कोशिश की गई है।

यहां वर्ष २००४ की दो महत्वपूर्ण घटनाओं का सन्दर्भ देना जरूरी समझता हूँ। मुम्बई में विश्व सामाजिक मंच का आयोजन और हिन्दुस्तान की चौदहवीं लोकसभा का चुनाव। दोनों ही घटनाओं को राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य के साथ ही वैश्विक परिप्रेक्ष्य में देखा जाना चाहिए।

विश्व सामाजिक मंच के आह्वान पर दुनिया के १३० देशों के दस लाख प्रतिनिधियों ने बेहतर दुनिया के निर्माण का सपना संजोये मुम्बई में एकजुटता का परिचय दिया। १६ से २१ जनवरी के इस समागम में साहित्यकार, कलाकार, विचारक, बुद्धिजीवी, स्वयं सेवी संगठनों, महिला संगठनों, मानवाधिकार संगठनों, ट्रेड यूनियनों व वामदलों के प्रतिनिधियों ने अपनी पूरी एकजुटता और संकल्प के साथ एक ध्रुवीय हो चुकी दुनिया और अमेरिकी साम्राज्यवाद के विरूद्ध संघर्ष का विगुल फूंका। विश्व बैंक, विश्व मुद्राकोष के दबाव और प्रभाव तथा वैश्विकरण और मुक्तबाजार व्यवस्था के बहाने पूंजीवादी देशों की कम्पनियों का विकासशील देशों में बढ़ता कारोबार और उनके विरूद्ध एकजुट होकर लड़ने की बात कई सत्रों की गई। विचार गोष्ठी के साथ-साथ कविता, पोस्टर, नाटक, गीत, जुलूस के माध्यम से लोगों ने 'विकल्पहीन नहीं है दुनिया' का नारा बुलन्द किया। सबकी चिन्ता थी साम्राज्यवाद, फासीवाद, बाजारवाद के

बढ़ते खतरे से दुनिया के शोषित वर्ग को छुटकारा दिलाना।

दुनिया में बढ़ती गरीबी, कुपोषण, अशिक्षा, भुखमरी, बेरोजगारी की भयावहता के पीछे अमरिकी पूंजीवादी साम्राज्यवाद और उसके संरक्षण में विदेशी कम्पनियों की लूट को देखा जाना चाहिए। एशिया महाद्वीप में पहले अफगानिस्तान और फिर इराक पर अमरीका का बर्बर हमला और इन दोनों देशों पर अमरिकी सेना का प्रत्यक्ष व परोक्ष ढंग से कब्जा पूरे एशियाई देशों लिए चिन्ता का विषय है। यह हमला दो सभ्यताओं के युद्ध के नाम पर किया गया। वास्तव में यह हमला एशिया के तेल संसाधन पर कब्जे की नियति से किया गया जो आज स्पष्ट हो चुका है। इन सारे सवालों को लेकर विश्व सामाजिक मंच से सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक चेतना का उभाड़ एवं एकजुटता सामने आई। दूसरी ओर इन्हीं तिथियों पर विश्व सामाजिक मंच के आयोजन स्थल से कुछ दूरी पर मुम्बई प्रतिरोध–२००४ का आयोजन अति वामपन्थी संगठनों द्वारा किया गया। विश्व सामाजिक मंच के आयोजन में एन.जी.ओ. की भूमिका को लेकर मतभेद के कारण मुम्बई प्रतिरोध का आयोजन किया गया।

इसी वर्ष हिन्दुस्तान की चौदहवीं लोकसभा का चुनाव सत्तापक्ष के गुडफील व इण्डिया शाइनिंग के आयातित श्लोगन के साथ सम्पन्न हुआ। अमरिकी पूंजीवादी साम्राज्यवादी मंशूबे के मुताबिक देश की जनता को हाकने वाली हुकूमत का ताना–बाना विश्व बैंक, मुद्राकोष और विदेशी कम्पनियों को गुडफील कराने के लिए बुना गया। हां कहने के लिए देश के मुट्ठी भर पूंजीपतियों, नौकरशाहों, दलालों को गुडफील कराने में कोई कमी नहीं की गई। देश की बहुसंख्यक जनता से उनका क्या लेना देना। प्रिन्ट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया, एक्जिटपोल, भारी–भरकम विज्ञापन और तरह–तरह के प्रलोभन। मानो सब कुछ तय हो चुका हो और सिर्फ ताजपोशी बाकी हो। 'कब तक तुम मौन रहोगे ओ जनदेवता' और जन देवता का मौन उंगलियों के स्पन्दन से टूटा और देखते–देखते 'सिंहासन खाली करो की जनता आती है' की पंक्ति साकार हो उठी। गुजरात मॉडल का सपना संजोये फासिस्टों को जनदेवता ने किनारे लगा दिया।

अभिनव कदम का कैफ़ी आज़मी विशेषांक शीघ्र पाठकों तक पहुंचे, अभिनव कदम परिवार इस कोशिश में लगा हुआ है। अभिनव कदम का यह अंक 'कल्पना' के सम्पादक दिवंगत बदरी विशाल पित्ती को समर्पित।

–जयप्रकाश धूमकेतु

राहुल सांकृत्यायन लोक संस्कृति संस्थान

संस्थान के उद्देश्य :

१- हिन्दी साहित्य के सृजन, संवर्धन, प्रचार-प्रसार के साथ राहुल सांकृत्यायन साहित्य का प्रचार तथा शोध परक कार्यों को आगे बढ़ाना ।

२- लोक संस्कृति व लोक कलाओं का संरक्षण, संवर्धन एवं विस्तार ।

३- साहित्य-कला-संस्कृति के माध्यम से साम्प्रदायिक सद्भाव, समता मूलक समाज एवं लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना के लिए वैज्ञानिक सोच का विस्तार ।

४- साहित्य के विभिन्न विषयों पर केन्द्रित विचार गोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ, प्रदर्शनियों एवं समारोहों के साथ-साथ नाट्य समारोहों का आयोजन तथा भविष्य में श्रेष्ठ कृतियों एवं प्रस्तुतियों को सम्मानित व पुरस्कृत करना ।

५- पुस्तकालय, वाचनालय की स्थापना तथा श्रेष्ठ सामग्री को पाठकों तक पहुँचाना आदि।

६- अर्धवार्षिक साहित्यिक-सांस्कृतिक पत्रिका का प्रकाशन तथा संसाधन की उपलब्धता पर अन्य श्रेष्ठ साहित्य प्रकाशित करना व संस्थान द्वारा प्रकाशन की व्यवस्था करना।

७- सामाजिक सरोकार से जुड़े जैसे- नारी चेतना, दलित चेतना, पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि तमाम सवालों पर सकरात्मक पहल।

८- संस्थान के बहुआयामी उद्देश्यों की पूर्ति के लिए भूमि व भवन की व्यवस्था ।

९- समानधर्मी साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थानों से समन्वय स्थापित करना तथा उनके क्रिया-कलापों को संस्थान के साथ जोड़ना व उन्हें प्रश्रय एवं संरक्षण प्रदान करना।

१०- हानि-लाभ निरपेक्ष के आधार पर उद्देश्यों के अनुरूप समाजसेवी संस्था के रूप में काम करना ।

सचिव

राहुल सांस्कृत्यायन लोकसंस्कृति संस्थान

२२३, निजामुद्दीनपुरा, मऊनाथ भंजन (मऊ)